प्रश्न 9 – धर्म की उत्पत्ति के सम्बन्ध में फ्रेजर के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिये।

Discuss the Frazer's theory of religions origin.

उत्तर— धर्म की उत्पत्ति का फ्रेजर सिद्धान्त

(Frazer's Theory Regarding the Origin of Religion)

स्काटलैण्ड निवासी फ्रेजर टायलर का उत्तराधिकारी था। उसने अपने धर्म एवं जादू सम्बन्धी विचार अपनी पुस्तक **"दी गोल्डन बो"** (The Golden Bough) में प्रकट किये। सामान्य भाषा में जादू एक विशेष प्रकार के चमत्कार को कहते हैं, जिससे लोगों को प्रभावित कर अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। कुछ विद्वानों के अनुसार यह एक जटिल प्रश्न है कि जादू पहले उत्पन्न हुआ या धर्म।

फ्रेजर का मत है कि सर्वप्रथम जादू टोनों का प्रचलन रहा होगा। उसका अनुमान है कि मानव ने जादू का प्रयोग आदिम मानव प्रकृति पर नियन्त्रण पाने एवं अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया होगा। लेकिन जब उसने देखा कि कई बार उसका जादू असफल हो जाता है और वह अपने उद्देश्यों को जादू द्वारा प्राप्त नहीं कर सकता, तब उसने अनुभव किया होगा कि यह अलौकिक शक्ति जादू के द्वारा मनुष्य के वश में नहीं की जा सकती।

इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न होने पर वह उसकी पूजा, प्रार्थना और आराधना करने लगा। उस समय धर्म की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार फ्रेजर के अनुसार असफल जादू-टोनों ने मानव को धर्म की ओर अग्रसर किया। इस आधार पर कहा जा सकता है कि धर्म प्रकृति के द्वारा पराजित मनोवृत्ति का परिणाम है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि फ्रेजर ने धर्म की उत्पत्ति में दो स्थितियों की कल्पना की (i) प्रथम स्थिति में जादू-टोनों का ही साम्राज्य था, (ii) द्वितीय स्थिति में जादू-टोनों के असफल होने पर अलौकिक शक्ति की पूजा और आराधना प्रारम्भ हुई जिसने धर्म की नींव डाली।

फ्रेजर का सिद्धान्त

धर्म की उत्पत्ति के क्षेत्र में *सर जेम्स फ्रेजर* का उल्लेख भी आवश्यक है। अपनी पुस्तक *दि गोल्डेन बो* के द्वितीय संस्करण में जादू का विश्लेषण करते हुए उन्होंने धर्म की उत्पत्ति पर भी प्रकाश डाला है। फ्रेजर का मत है कि आदिम मनुष्य जब अज्ञात और अदृष्ट शक्तियों को रहस्यमय एवं गुप्त साधनों, अभिचारों और मन्त्रों द्वारा अपने वश, नियन्त्रण में करने के प्रयास में विफल हो गया तब ये प्रयास स्वयं उसे ही निरर्थक व व्यर्थ दिख पड़े। तत्पश्चात् उसे यह आभास होने लगा कि वह इन शक्तियों पर विजय तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह अपनी असमर्थता स्वीकार कर इन शक्तियों के प्रति आत्म-समर्पण नहीं कर देता है। एतदर्थ वह इन शक्तियों को नियन्त्रित करने के प्रयत्न न कर स्वयं उनसे नियन्त्रित होने लगा। इन शक्तियों को आदेश देने के स्थान पर वह प्रार्थना, अनुनय-विनय एवं उपासना द्वारा इनका कृपा-पात्र बनने का प्रयास करने लगा। इस प्रकार आदिम मनुष्य जब अद्वितीय रहस्यमय एवं अज्ञेय शक्तियों को कारण तथा कार्य की एक सम्पूर्ण नियमितता की पूर्वकल्पना के आधार पर समझने का प्रयास न कर प्रार्थना, आराधना, उपासना की भावना के आधार पर समझने का प्रयत्न करने लगा,[41] तब उसमें धार्मिक अनुभूति की सृष्टि हुई जिसके परिणामस्वरूप धर्म की उत्पत्ति हुई। फ्रेजर का मत है कि आदिम धर्म का स्रोत इच्छित परिणामों को प्रभावित करने के लिए जादू की असफलता है। आदिम मानव नैराश्य होकर अतिमानवीय एवं अतिप्राकृतिक शक्तियों के समक्ष नतमस्तक हुआ, अतः धर्म इन अज्ञात एवं अदृष्ट शक्तियों से पराजित मनोवृत्ति का परिणाम है। वह विश्वास करता है कि जादू से भिन्न धर्म अतिमानवीय एवं अतिप्राकृतिक शक्तियों में विश्वास से सम्बन्धित है जिन्हें प्रार्थना व आराधना द्वारा प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। विश्वास का यह स्तर तो जादूई विश्वास के परे है जो आदिम मानव के जीवन में उस समय उद्‌भूत हुआ जब उसने जादू से व्यवहारों की असारता का अनुभव किया तथा इसकी अपेक्षा उन शक्तियों का सहारा लेने का प्रयास किया जो उसे (1) मानवीय एवं प्राकृतिक शक्तियों से उच्चतर शक्ति प्रतीत हुई, (2) मानवीय जीवन एवं प्राकृतिक जीवन का मार्गदर्शन एवं नियन्त्रण करने वाली शक्ति प्रतीत हुई, एवं (3) कारण-कार्य के सामान्य क्रम को अपने आदेश द्वारा परिवर्तित करने वाली शक्ति प्रतीत हुई। परिणामतः यहीं से आदिम मनुष्यों में धार्मिक चेतना का उदय होना प्रारम्भ हो गया। इस प्रकार फ्रेजर के सिद्धान्त के अनुसार धर्म की उत्पत्ति जादू की असफलता के कारण हुई है। यह मानते हुए कि जादू में विश्वास प्रायः सभी समाजों में पाया जाता है, फ्रेजर ने यह निष्कर्ष ज्ञापित किया कि यह सभी धर्मों का आदि आधार है। फ्रेजर का यही धर्म-संक्रान्ति का सिद्धान्त (थियरी ऑफ ट्रांसिजन ऑफ रिलिजन) है।

फ्रेजर ने धर्म की उत्पत्ति जादू से बतायी है। आदिम मनुष्य ने प्रकृति पर नियन्त्रण पाने तथा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जादू और टोने का सहारा लिया। जब आदिम मनुष्य जादू और टोने के बल पर अपनी समस्याओं को हल करने में असफल रहे तो उन्होंने समझ लिया कि संसार में कोई ऐसी शक्ति विद्यमान है जो जादू-टोनों से बहुत अधिक ऊँची और शक्तिशाली है तथा जादू के प्रभाव को निष्फल कर देती है। उन लोगों में ऐसा विश्वास दृढ़ हो गया कि ऐसी शक्तियों पर जादू-टोने से नियन्त्रण पाने की चेष्टा करना व्यर्थ है। उसे तो पूजा, अराधना-प्रार्थना द्वारा ही अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। आदिम मनुष्यों की इसी धारणा ने उन्हें पूजा-प्रार्थना आदि में लगा दिया। इस तरह सबसे पहले धर्म की उत्पत्ति हुई।

पिडिंगटन (Piddington) के अनुसार, "The sources of primitive religion he (James Frazer) finds in the failure of magic to effect the desired results. Magic, he belives to be a mistaken application of principles of association which properly employed, lead to science".

इस तरह, हम देखते हैं कि फ्रेजर (Frazer) के अनुसार धर्म की उत्पत्ति में दो महत्त्वपूर्ण अवस्थाएँ पायी जाती हैं। प्रथम अवस्था में जादू और टोने का प्रभाव रहा। इसे धर्म की प्राथमिक अवस्था कहा जा सकता है। द्वितीय अवस्था में जादू-टोने से निराश होकर आदिम लोगों ने दैवीय शक्तियों की अराधना प्रारम्भ कर दी। इसी अवस्था से धर्म की वास्तविक उत्पत्ति हुई।

फ्रेजर के सिद्धान्त को भी विद्वानों ने अमान्य घोषित कर दिया है। विद्वानों ने इसे कल्पना प्रधान बतलाया है। इस सिद्धान्त की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि इसमें सामाजिक विकास की एक ऐसी अवस्था की कल्पना की गई है जब सर्वत्र जादू-टोनों का साम्राज्य था। इस पक्ष में कोई भी ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक मत नहीं मिलता।

फ्रेजर द्वारा प्रतिपादित धर्म-संक्रान्ति के सिद्धान्त के विरुद्ध निम्नलिखित आपत्तियाँ प्रकट की जा सकती हैं–

1. जादू की असफलता निश्चय ही धर्म का उद्‌गम स्रोत नहीं है। फ्रेजर की यह मान्यता की जादू धर्म का पूर्ववर्ती है, तर्काश्रित नहीं है, बल्कि ये दोनों एक साथ मिले हुए दिखाई पड़ते हैं और धर्म

बहुधा जादू के निदेशन में विकृत हो जाता है।

2. आदिम संस्कृति में आभिचारिक व्यवहार की असफलता की अनुभूति का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। परन्तु फ्रेजर ने अपनी कृति में धर्म की उत्पत्ति के मूल में जादू की असफलता को सिद्ध किया है। अतः उसका ऐसा कहना निराधार प्रतीत होता है।

3. यदि आभिचारिक व्यवहार की असफलता को मान भी जाय तब भी यह प्रमाणित करना बहुत कठिन है कि इससे धार्मिक विचारों की उत्पत्ति कैसे हुई, यद्यपि यह इनको प्रेरित कर सकता है यदि वे पहले से ही विद्यमान हों और यदि वे पहले से विद्यमान हैं तब फिर जादू को धर्म का उद्‌गम स्रोत कैसे माना जा सकता है। यदि ऐसा माना जाता है तो इसमें कार्य-कारण सम्बन्ध का दोष ढूँढ़ा जा सकता है, क्योंकि कारणता के सिद्धान्त के अनुसार समान कारण से समान कार्य की उत्पत्ति होती है।

4. दुर्खीम का मत है कि जादूई व्यवहार के आधार पर धर्म की उत्पत्ति की उचित व्याख्या नहीं की जा सकती है। जादू में लोगों को सामूहिक जीवन में बाँधने वाली शक्ति का पूर्णतया अभाव है। विश्व में कहीं भी जादू का 'चर्च नहीं है। जादूगर एवं उसके अनुयायियों में ऐसा कोई स्थिर सम्बन्ध नहीं होता है, जिसके आधार पर उसके अनुयायियों को नैतिक समुदाय में बाँधा जा सके। उनकी कोई एक समान पूजा विधि-समूह भी नहीं पाया जाता। जादूगर का ग्राहक-गण-समूह अवश्य होता है, चर्च नहीं और उसके ग्राहक-गण-समूह के सदस्यों का एक-दूसरे के साथ कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं होता है, यहाँ तक कि वे एक-दूसरे को जानते भी नहीं हैं और उनका आपसी सम्बन्ध आकस्मिक एवं क्षणिक होता है, उनका सम्बन्ध बीमार व्यक्ति एवं उसके चिकित्सक की भाँति होता है।[42] इस प्रकार दुर्खीम का मत है कि जादू धर्म का उद्‌गम स्रोत नहीं है क्योंकि जादू में धार्मिक-पवित्रता के तत्व का पूर्णतया अभाव है और जिसमें इसका अभाव है, उसे दुर्खीम धर्म का उद्‌गम स्रोत मानने को तैयार नहीं हैं। फिर भी एडुअर्ड *मेयर* की टिप्पणी है कि जादू से धर्म के उद्‌भव का स्वरूप अपेक्षाकृत कम आलोचना का विषय है। ऐसा कहा जा सकता है कि जादू की व्यवस्था सभी आदिम लोगों के विचारों की क्रियाओं एवं तरीकों को प्रमुख रूप से प्रभावित करती है तथा जादू की व्यवस्था से विचारों और आचारों, प्रथाओं और रिवाजों एवं परम्पराओं और व्यवहारों के निकाय का उद्‌गम स्रोत जादू ही है जिसे हम धर्म के नाम से समझते हैं।[43] बाह्य रूप से इस कथन पर कुछ भी टीका-टिप्पणी नहीं की जा सकती है, किन्तु यदि हम यह कहते हैं कि जादू धर्म का पर्याप्त कारण है, इस पर गम्भीर आपत्ति प्रकट की जा सकती है। विशेषकर धर्म की मनोवैज्ञानिक प्रकृति के सन्दर्भ में आपत्ति प्रकट की जा सकती है जिसकी व्याख्या जादू सम्यक् रूप से नहीं कर सकता है।

आलोचना
(Criticism)

फ्रेजर के सिद्धान्त की आलोचना निम्न आधार पर की गयी है—

(i) **प्रमाण हीन**—इस बात के पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि कभी ऐसी भी अवस्था थी जब केवल जादू-टोना ही प्रचलित रहा हो।

(ii) **अनुपयुक्त मत**—जादू अथवा टोने से इतने बड़े धर्मों का आविर्भाव असम्भव प्रतीत होता है। धर्म को जादू का विकसित रूप स्वीकार करना धर्म के प्रति अनुपयुक्त धारणा है। यह तो स्वीकार किया जा सकता है कि जादू और टोना धार्मिक प्रभाव को बढ़ाने के लिये उत्पन्न हुए हों।

(iii) **सर्वव्यापकता का अभाव**—विश्व के अनेक धर्मों में जादू का सर्वथा अभाव है। प्रश्न यह उठता है कि क्या उन्हें धर्म नहीं कहा जा सकता या उस धर्म की उत्पत्ति जादू से नहीं हुई।

(iv) **धर्म से भिन्न**—जादू व टोना में मनुष्य अपनी सिद्धियों पर अधिक विश्वास रखता है। इसके विपरीत धर्म से व्यक्ति ईश्वर की शक्ति पर भरोसा अधिक रखता है।

(v) सामाजिक कारकों की उपेक्षा—इस सिद्धान्त में जादू-टोना ही प्रचलित रहा है। धर्म की उत्पत्ति में अन्य सामाजिक कारकों की अवहेलना की गयी है। ❑